

>

Title: Need to divert the Amaravati-Narkhed rail line passing near the ancient Well 'Jagtik Manvata' worshipped by the followers of Mahanubhav Panth in Maharashtra.

श्री दत्ता मेघे (वर्धा): मैं सरकार का ध्यान मेरे चुनाव क्षेत्र के महानुभाव पंथ के आंदोलन की तरफ दिलाना चाहता हूँ। जैसाकि आप जानते हैं कि महाराष्ट्र संतों की भूमि रही है। 12वीं सदी में श्री चक्रधर स्वामी ने महानुभाव पंथ की स्थापना की थी। यह पंथ सर्व धर्म समभाव में विश्वास रखता है और जात-पात के घोर विरोधी है। इसी पंथ के श्री गोविंद प्रभु ने 8वीं सदी में दलित समाज के लिए एक पानी के कुएं का निर्माण किया था जिसे मातंग विहीर नाम से जाना जाता है। आज इसे जागतिक मानवता स्मारक नाम दिया गया है। यह कुंआ महानुभाव पंथ के लिए ऐतिहासिक धरोहर है तथा सामाजिक जागृति का प्रतीक है अब यही कुंआ अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है। इसका मुख्य कारण है कि इस कुएं के 5 फीट की दूरी से गुजर रही अमरावती-नारखेड रेल लाइन। महानुभाव पंथ के लोगों का मानना है कि जब भी यह रेल इन पटरियों से गुजरती है तब उसके कंपन से यह कुंआ प्रभावित होता है और समय के साथ यह नष्ट भी हो सकता है। इसी कारण पिछले 12 वर्षों से महानुभाव पंथ के अनुयाई अपनी लड़ाई लड़ रहे हैं।

माननीय पूर्व रेल मंत्री जी ने आश्वासन दिया था कि रेल की पटरी और कुएं में उचित दूरी रखी जाएगी, किन्तु ऐसा नहीं हुआ और रेल लाइन सिर्फ 5 फीट की दूरी पर डाल दी गई। मेरा सरकार से यही निवेदन है कि इस रेल लाइन को कुएं से 15 मीटर दूरी पर डाला जाय और इस मानवता के स्मारक को नष्ट होने से बचाया जाए।